ISSN - 2229-3620
UGC Approved Journal No. - 48819
राजनीति शास्त्र
SHODH SANCHAR BULLETIN
Vol. 7, Issue 27 July - Sept. 2017
Page Nos. 134-136
AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

गांधी जी की अहिंसा की अवधारणा तथा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उसकी प्रासंगिकता

58

❑ डॉ० आगा सिंह*

शोध सारांश

वर्तमान विश्व आज कई सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक समस्याओं से दो–चार हो रहा है। विश्व का जनमानस आ आतंकवाद, आर्थिक विषमता जनित समस्याओं, सामाजिक तथा वर्गीय तनाव, स्वास्थ्य, गरीबी, भूख से त्रस्त हो चुका है। विश्व द महायुद्धों से सीख न लेता हुआ अब तीसरे महायुद्ध की ओर अग्रसर प्रतीत होता है। मानव जाति के समक्ष आतंकवाद, आर्थिक मंद सामाजिक विभेद, पर्यावरण क्षय आदि समस्याएं विकराल रूप ले चुकी हैं। इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक की शुरुआत संसार के बहु से देशों में जनाक्रोश के कारण सत्ता परिवर्तनों से हुई है। विभिन्न देशों में चल रहे जनांदोलन परिवर्तन की नई पटकथा लिख रहे ह ऐसे अशांत वातावरण में मानव अस्तित्व के लिए गांधी जी की 'अहिंसा' की अवधारणा ही एकमात्र ऐसा मार्ग उपलब्ध कराती है जिस मानव तथा मानवता की चिर–प्रतीक्षित आकांक्षा 'शान्ति' की प्राप्ति सम्भव हो सकती है। प्रेम, सहयोग, शांति तथा सत्य आधारित अहि ही वह माध्यम तथा शक्ति है जो इस संक्रमण की स्थिति में सम्पूर्ण विश्व को सही राह दिखा सकती है।

आदिम समाज से आज तक मानव विकास की यात्रा में शांति की तलाश में है। आधुनिक समय में विज्ञान के बल पर विकसित उन्नत अस्त्र व शस्त्र मानवता के अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह है। आतंकवाद की गहराती जड़ें समस्त सभ्य समाज के लिए स्थायी तनाव व समस्या का रूप ले चुकी है। विश्व दो महायुद्धों से सीख न लेता हुआ अब तीसरे महायुद्ध की ओर अग्रसर प्रतीत होता है। मानव जाति के समक्ष आतंकवाद, आर्थिक मंदी, सामाजिक विभेद, पर्यावरण क्षय आदि समस्याएं विकराल रूप ले चुकी हैं।

मानव अस्तित्व के लिए गांधी जी की 'अहिंसा' की अवधारणा अत्यंत महत्वपूर्ण तथा प्रासंगिक हो जाती है, जिससे मानव तथा मानवता की चिर–प्रतीक्षित आकांक्षा 'शान्ति' की प्राप्ति सम्भव है। अहिंसा ही वह माध्यम तथा शक्ति है जो इस संक्रमण की स्थिति में सम्पूर्ण विश्व को सही राह दिखा सकती है। "मानव की बुद्धि ने संसार में जो प्रचण्ड से प्रचण्ड अस्त्र तथा शस्त्र बनाए हैं, उनसे भी प्रचण्ड यह अहिंसा की शक्ति है।"[1] अहिंसा की इस प्रचण्ड शक्ति जिसका उद्देश्य मानव तथा जगत का कल्याण है, के माध्यम से ही विश्व की उपरोक्त समस्याओं का समाधान सम्भव है।

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में व्याप्त परस्पर अविश्वास, भय, शोषण, संघर्ष तथा प्रतिशोध के मूल में अनीति, अन्याय व हिंसा विद्यमान है, परन्तु विश्व शांति की प्राप्ति, अन्याय, हिंसा तथा अत्याचार से सम्भव नहीं बल्कि इसके लिए मानव जाति को म जी के अहिंसा के मार्ग पर चलना होगा।

ऐसे में विश्व शांति का पथ गांधी जी के दर्शन में विद्य है, जिसके अनुसार अहिंसा की अनुपालना विश्व शांति स्थापना का एकमात्र साधन है। मानव समाज के लक्ष्य 'वि शान्ति' के मार्ग का प्रारम्भ व्यक्तिगत परिवर्तन से होता है क्रमशः सामाजिक व राष्ट्रीय आयाम प्राप्त करता हुआ अ वैश्विक परिवर्तन को सम्भव बनाता है।[2]

उग्र राष्ट्रवाद ने विश्व शांति के विरुद्ध कई भयकर का सूत्रपात किया परन्तु अन्ततः मानव जाति को इस निष्कर्ष पहुंचना पड़ा जो आर.वी. ग्रेग के इन शब्दों में निहित है कि नरक है, एक लम्बा तथा उबा देने वाला संघर्ष है, जिसमें सै सारे नियमों व बन्धनों को त्याग देते हैं।"[3]

परन्तु गांधी जी संकुचित व उग्र राष्ट्रवाद के स्थान अन्तर्राष्ट्रीयवाद के समर्थक हैं। उनके विचार में अहिंसा आध अन्तर्राष्ट्रीयवाद ही विश्व बन्धुत्व है, जिसको आत्मसात किए विश्व में शांति की स्थापना नहीं हो सकती। स्थायी विश्व श की स्थापना के लिए साधन व साध्य की पवित्रता के आद स्वीकारने मात्र से ही मानवता युद्ध की विभीषिका से बच र है। उनका मानना था "जब दो देश युद्ध कर रहे हों तो अहि व्रतियों का यह कर्त्तव्य बनता है कि वे युद्ध को रोकें और हेतु प्रयास करें।"

*एसोसिएट प्रोफेसर – राजनीति शास्त्र विभाग, कुमारी मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गौतमबुद्ध नगर (उ०प्र०)